संगीत नाटक अकादेमी

संगीत, नृत्य एवं नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी

रवीन्द्र भवन, 35 फिरोज़शाह रोड, नई दिल्ली—110001

दूरभाष: 91.11.23387246, 23387247, 23387248, 23382495

फैक्स: 91—11—23382659, 23385715

ई—मेल: mail@sangeetnatak.gov.in

वेबसाइट: http://sangeetnatak.gov.in

संगीत नाटक अकादेमीः
एक परिचय

संगीत नाटक अकादेमी भारत गणराज्य द्वारा स्थापित संगीत, नृत्य और नाटक की प्रथम राष्ट्रीय अकादेमी है। इसका गठन भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के 31 मई 1952 के प्रस्ताव के ज़रिए किया गया था और भारत के गजट में इसे जून 1952 में अधिसूचित किया गया था। इसके पहले अध्यक्ष डॉ. पी वी राजमन्नार की नियुक्ति और देश भर के प्रतिनिधियों से बनी महापरिषद के गठन के बाद अकादेमी ने अगले साल काम करना शुरू किया। भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 28 जनवरी, 1953 को संसद भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में इसका उद्‌घाटन किया। अकादेमी के उद्‌घाटन के मौके पर अपने संबोधन में तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने कहाः

> संगीत, नाटक और नृत्य भारत की ऐसी बहुमूल्य विरासत है जिसकी हमें कद्र करनी चाहिए और इसका विकास करना चाहिए। हमें ऐसा सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि मानव जाति की सांस्कृतिक विरासत के प्रति योगदान के रूप में करना चाहिए। बने रहने का मतलब नया बनाना है – यह कला के क्षेत्र में जितना सच है उतना और कहीं नहीं। परम्पराओं का संरक्षण ही नहीं किया जा सकता है बल्कि नई परंपराएं बनाई जा सकती हैं। इस अकादेमी का यह लक्ष्य होगा कि हमारी परंपराओं का संरक्षण करे और इसके लिए इन्हें संस्थागत रूप दिया जाए . . .
>
> लोकतांत्रिक व्यवस्था में, कला अपनी निरंतरता सिर्फ जनता और सरकार से प्राप्त कर सकती है, इसलिए जनता की इच्छा संगठित रूप से अवश्य अभिव्यक्त होनी चाहिए। इसलिए . . . (कला का) रख–रखाव और विकास (इसकी) पहली जिम्मेदारियों में से एक होना चाहिए।

अकादेमी के क्रिया–कलापों का विस्तार मूल सोच के आधार पर 1961 में किया गया जब संगीत नाटक अकादेमी का सरकार द्वारा एक सोसाइटी के रूप में पुनर्गठन किया गया और इसका पंजीकरण सोसाइटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1860 (जैसा 1957 में संशोधित किया गया था) के तहत किया गया। इन क्रिया–कलापों का उल्लेख अकादेमी के संगम–ज्ञापन में किया गया है। इसे 11 सितंबर 1961 को सोसाइटी के रूप में पंजीकृत कर अपनाया गया।

अपने स्थापना काल से ही अकादेमी देश में प्रदर्शन कला के क्षेत्र की शीर्षस्थ संस्था के रूप में कार्य करती रही है और देश में संगीत, नृत्य और

नाटक की विभिन्न संस्कृतियों की व्यापक अमूर्त परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए कटिबद्ध है। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अकादेमी भारत सरकार और विभिन्न राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों की कला अकादेमियों तथा देश की प्रमुख सांस्कृतिक संस्थाओं से सामंजस्य बैठाती है और सहयोग प्रदान करती है।

अकादेमी प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं एवं परियोजनाओं की स्थापना एवं उनकी देखरेख करती है। अकादेमी ने जुलाई 1959 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं एशियन थिएटर इंस्टीट्यूट की स्थापना की। वर्ष 1975 में जब एशियन थियेटर इंस्टीट्यूट अकादेमी से अलग हुआ तब इसका विलय राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में हो गया। तब इसे एक स्वायत्त संस्थान का दर्जा मिला। उसी वर्ष इसका सोसायटी के रूप में पंजीकरण हुआ।

सम्प्रति संगीत नाटक अकादेमी की तीन घटक इकाइयां है जिनमें से दो इकाइयां नृत्य प्रशिक्षण संस्थान के रुप में कार्यरत हैं – इम्फाल में स्थित जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी (जे एन एम डी ए) और दिल्ली में स्थित कथक केन्द्र। जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी की स्थापना वर्ष 1954 में भारत सरकार द्वारा मणिपुर डांस कॉलेज के रूप में हुई थी। अपने स्थापना काल से ही इसे संगीत नाटक अकादेमी से वित्तीय सहायता मिलती रही है। वर्ष 1957 में यह संगीत नाटक अकादेमी की घटक इकाई बना। आगे चलकर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के नाम पर इसका पुनः नामकरण हुआ। मणिपुर नृत्य के प्रमुख संस्थान के तौर पर जे एन एम डी ए, लाइ हराओबा और थांग–टा जैसी कलाओं के अतिरिक्त मणिपुर नृत्य एवं संगीत में अनेक व्यापक पाठ्यक्रम संचालित करता है जो व्यावसायिक कलाकारों के लिए आधारभूत पाठ्यक्रम होते हैं। एकेडमी की प्रस्तुति इकाई में पारंपरिक एवं समसामयिक रचनाओं का समृद्ध भण्डार है।

इसी प्रकार कथक केन्द्र, कथक नृत्य का प्रमुख शिक्षण संस्थान है। दिल्ली में स्थित यह केन्द्र कथक नृत्य, गायन, संगीत एवं पखावज में विभिन्न पाठ्क्रमों का संचालन करता है। जवाहर लाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी की तरह कथक केन्द्र की भी प्रस्तुति इकाई है जो प्रायोगिक प्रस्तुतियों के जरिए कथक नृत्य की तकनीकियों और रेपरट्री को और समृद्ध बनाती है।

रवीन्द्र रंगशाला अकादेमी की तृतीय घटक इकाई है। अप्रैल 1993 में तत्कालीन संस्कृति विभाग द्वारा रवीन्द्र रंगशाला का प्रबन्धन अकादेमी को सौंपा गया। इसमें एक मुक्ताकाशी सभागार है। दिल्ली रिज पर स्थित रंगशाला में 7 हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था है।

केरल के प्राचीन संस्कृत रंगमंच कूटियाट्टम को समर्थन देने के लिए, पूर्वी भारत के छऊ नृत्य एवं असम की सत्रिय परंपराओं को समर्थन देने के

उद्देश्य से अकादेमी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर परियोजनाएं शुरु की गयीं। परिणामतः 27 मई 2007 को अकादेमी ने कूटियाट्टम के लिए तिरुवनन्तपुरम में कूटियाट्टम केन्द्र की स्थापना की।

अकादेमी ने सत्रिय नृत्य, संगीत एवं रंगमंच परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु 15 जुलाई 2008 को गुवाहाटी में सत्रिय केन्द्र की स्थापना की। इसी वर्ष 20 अगस्त 2008 को अकादेमी ने पूर्वोत्तर भारत की पारंपरिक लोक प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण के लिए शिलांग में पूर्वोत्तर केन्द्र की स्थापना की। केन्द्र का कार्यालय अब गुवाहाटी स्थित सत्रिय केन्द्र परिसर में स्थानान्तरित हो गया है।

अकादेमी पुरस्कार, कला साधकों को दी जाने वाली सर्वोच्च राष्ट्रीय मान्यता है। अकादेमी, संगीत, नृत्य और नाटक के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों और विद्वानों को रत्नसदस्यता देती है। इस रत्न सदस्यता (अकादेमी रत्न) के अन्तर्गत 3 लाख रूपये और अकादेमी अवार्ड (अकादेमी पुरस्कार) के लिए 1 लाख रुपए नकद दिए जाते हैं। युवा कलाकारों को सम्मानित करने के उद्देश्य से अकादेमी ने वर्ष 2006 से उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के नाम पर उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ युवा पुरस्कार आरम्भ किए। युवा पुरस्कारों के तहत 25 हज़ार रुपए की नकद धनराशि भेंट की जाती है।

अकादेमी शिक्षण एवं प्रदर्शन में रत संस्थाओं के कार्यों के लिए आर्थिक मदद देती है, संगीत, नृत्य और थिएटर के प्रदर्शन तथा उसके प्रचार–प्रसार में जुटी संस्थाओं को प्रोत्साहित करती है, प्रदर्शन कला से संबंधित अनुसंधान, प्रलेखन और प्रकाशन के लिए अनुदान देती है, विशिष्ट विषयों के सेमिनार और कांफ्रेंस का आयोजन करती है एवं इसके लिए आर्थिक सहायता देती है तथा अपने ऑडियो–वीडियो अभिलेखागार के लिए प्रलेखन और रिकार्डिंग का काम भी करती है।

अकादेमी के अभिलेखागार में वृहद् स्तर पर ऑडियो–वीडियो टेप्स, फोटोग्राफ एवं फिल्में हैं, देश में यह प्रदर्शन कलाओं का सबसे बड़ा अभिलेखागार है, जिसे प्रदर्शनकारी कलाओं पर अनुसंधान कार्य हेतु व्यापक रूप से तैयार किया गया है। अकादेमी में एक संदर्भ ग्रन्थालय है जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी तथा कुछ क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें हैं। अकादेमी के रवीन्द्र भवन में एक वाद्य वीथिका है जिसमें संगीत वाद्‌य, मुखौटे एवं पुतुल प्रदर्शित किये गये हैं, इसमें 200 से ज़्यादा वाद्य प्रदर्शित किए गए हैं। अकादेमी में एक प्रलेखन इकाई है जिसमें नृत्य, नाटक एवं संगीत के विद्वान गुरुओं की रिकार्डिंगों का संग्रहण है। अकादेमी की प्रकाशन इकाई प्रासंगिक विषयों पर साहित्य का प्रकाशन करती है।

प्रदर्शन कला में विशेषज्ञता प्राप्त शीर्षस्थ संस्था के रूप में अकादेमी प्रदर्शन कला से संबंधित नीतियां और कार्यक्रम बनाने में भारत सरकार को भी परामर्श और सहयोग प्रदान करती रहती है। इसके अलावा, भारत के विभिन्न क्षेत्रों और भारत व विश्व के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा

देने की जिम्मेदारी भी अकादेमी निभाती है।

संगीत नाटक अकादेमी भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्था है। इसकी सम्पूर्ण योजनाओं व कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का वित्त पोषण पूर्ण रूपेण भारत सरकार करती है। अकादेमी का प्रबंधन उसकी महापरिषद् में निहित है। अकादेमी के कार्यों का सामान्य अधीक्षण, निदेशन व नियंत्रण कार्यकारी मंडल द्वारा किया जाता है, जिसकी सहायता के लिए वित्त समिति, अनुदान समिति, प्रकाशन समिति तथा अन्य परामर्शदात्री समितियाँ जैसे संगीत, नृत्य, रंगमंच, प्रलेखन, अभिलेखागार, पुतुल कला और लोक एवं जनजातीय कला समिति आदि हैं। संगीत नाटक अकादेमी के शिक्षण संस्थानों एवं अन्य केन्द्रों के प्रबन्धन में इन संस्थानों की सलाहकार समितियां अकादेमी के कार्यकारी बोर्ड की मदद करती है।
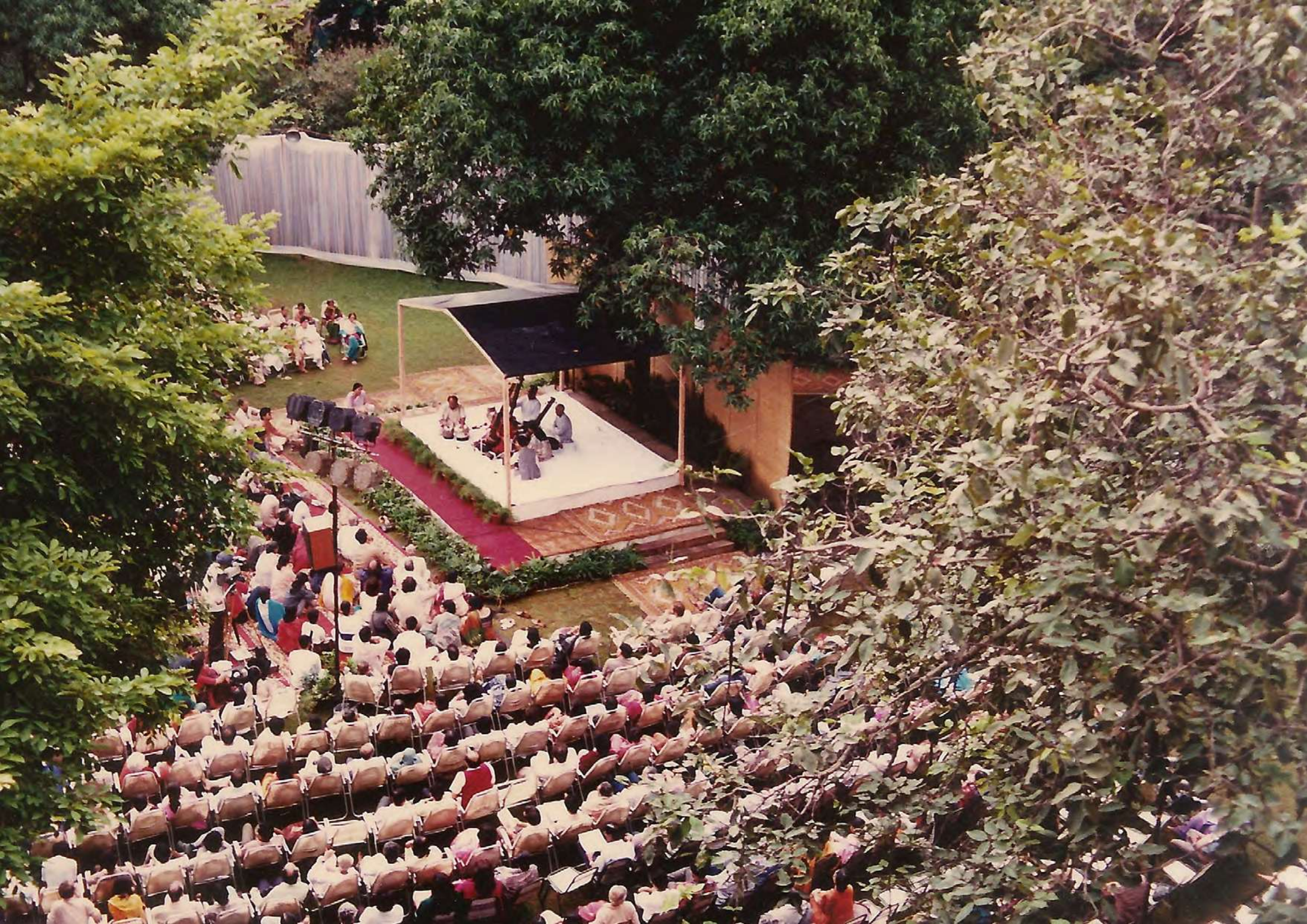
सम्प्रति प्रख्यात भरतनाट्यम नृत्यांगना एंव गुरू श्रीमती लीला सैमसन (2010–15) अकादेमी की अध्यक्ष हैं तथा सुप्रसिद्ध लेखिका एवं समालोचक श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह अकादेमी की उपाध्यक्ष हैं। श्रीमती हैलेन आचार्य अकादेमी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी और कार्यकारी सचिव हैं। सचिव की सहायता के लिए संगीत, नृत्य, नाटक, समन्वय, वित्त, प्रशासन, प्रकाशन, प्रलेखन, लोक एवं जनजातीय कला के उपसचिव तथा अकादेमी के पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। कथक केन्द्र एवं जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी के निदेशक तथा कूटियाट्टम केन्द्र एवं सत्रिय केन्द्र के परियोजना निदेशक इन संस्थानों के प्रबन्धन में सचिव की सहायता करते हैं।